

**THE INSTITUTE FOR
ADVANCED STUDIES
OF WORLD RELIGIONS**

FILM—STRIP NO.
MBB—1971—48—20

**BUDDHIST. SANSKRIT
MANUSCRIPTS**

MICROFILM PROJECT MBB 11.

MBB-1972-48

1. Film strip number

12

2. Source

TRAYODASĀTMAKASAMĀDHI

3. Title

4. Additional title, shortened forms of title etc.

N. S. 883 + 880 = A. D. 1763

5. Year in which MS was copied
(Nepali Samvat and Christian Era)

DHARMACAKRĀSĪMHA

6. Name of scribe

NEPALI PAPER

7. Material (palm leaf, etc.)

NEWĀRĪ

8. Script

18 cm x 3 cm

9. Size

6

10. Lines to a page

20

11. Number of leaves in complete work

x

12. Missing leaves

x

13. Author and Date of composition
(if given)

14. Number of Chapters

Yoga with practice

15. Remarks

ॐ शुभस्थानमस्तु ३ ॥ ॐ आ ४ हूं वं व ऊ द क हूं स्वाहा ॥ लंखमाधन ॥ ॐ यथा हि ज्ञानमात्रं ह
स्त्रायिता सर्वतथा गतं सुधा हं स्त्राययिष्यामि शुद्धं रुदियनवा विष्णु ॐ आ सर्वतथा ग
तं इति वक्तुं मथिय हूं ॥ मातुसलं खनदा य ॥ ॐ ऊ ४ स्वाहा ॥ ३ ॥ ना सिय ॥ ॐ काया ३
विमाधन स्वाहा ॥ लाहान सिय ॥ ॐ न मातु गवत्य युष्मकं रुवा जाय नथा गताया ह
क्तं माया वृद्धाय ॥ न यथा ॥ ॐ युष्म २ मदायुष्म सुयुष्म युष्मा रुव युष्म स रुव युष्मा व
किं वल स्वाहा ॥ युजा रुव आय ॥ स्त्रान काया व कया व नुयुक्तं न हूं मथिय क ॥ ॐ आ ४ हूं

॥ ३ ॥ आसनयाय ॥ उं निषवज आसनं ॥ वाहाजव खवखाननिन ॥ उं सर्वयायानय
नय ॥ खानं च य ॥ उं मधिधिविजिहि. महायमिसु. वृक १ मां सर्वसुखानां च ॥ १ ॥
१ खाहा ॥ चन सिधनय. मधुलसरावया ॥ दाअथमं निश ॥ उं वजनिवकरुषनखा
हा ॥ उं वजादकं खाहा ॥ उं वजरा मयखा ॥ हा ॥ उं वजयस्वसु ॥ मधुलस. क
खान. लखकास्य. थिभं नय ॥ उं दानं ॥ मय. मं वनावसुहिनं. हीलं वसुमाऊनं. काकि
१ ॥ दयिपी ठिकानयनयनं. वीर्यक्रियासुयन. ध्यानं नकुनं भक्तविरुक्तवर्णं. यज्ञस

प्रश्ना. कृत्वा यमायात्र मिता. यत्तु वदरु न कृत्वा. मुनिमधुलं. रु वदु कनक वधूं. सर्वत्राया
विमुक्तः स प्रमनुज विक्षिप्त. श्रुतवदीय काकिः ॥ धनकनकः समुद्धि जायते याज वंही
स गगन वद गुरु सिन काय क मान कृत्वा ॥ ३ ॥ स प्रश्न सर्व कथा गन अ धि निष्ठ रुसा
हा ॥ ३ ॥ वद क विम प्रसा हा ॥ या हा न सखा ॥ न वि कु ध द न या व धा न क ॥ ३ ॥ वज स ल स
व वि घ्रा नु स्था प्र थ रू ॥ स्नान वि कु ध न का या व म धु ल दू य का अ. व लि स वा य ॥ ३ ॥ वज रु म रु
स प्र थ रू सर्व कथा गन. अ धि ष्ठा ना धि धि न स्ना हा ॥ ३ ॥ वज स व धू धा ल स्ना हा ॥ म धु ल थि ल ३

स्वानवाय ॥ उं हं महामह्यमववनम ॥ उं कीं मह्यमववनम ॥ उं हं गृह्यमववनम ॥
म ॥ दथस ॥ उं यं यूर्वविदहायनम ॥ द्वा ॥ उं यं कसुदियायनम ॥ खवस ॥ उं लसुय
खदावलियायनम ॥ थवन ॥ उं वं डरुन ॥ कुवनम ॥ उवस ॥ उं यं डयदियायन
म ॥ खवकानस ॥ उं वं डयदियायनम ॥ ॥ खवथकानस ॥ उं लं डयदियायनम ॥
उवथकानस ॥ उं वं डयदीयायनम ॥ उवकाथुकनस ॥ उं यं गऊनलायनम ॥ द्वावन ॥ उं
वं यूर्ववलायनम ॥ खवस ॥ उं लं गृह्यवलायनम ॥ थवन ॥ उं वं श्रीवलायनम ॥

जवस॥ उँयाखप्रवलायनम॥ खवकानस॥ उँवामदिवलायनम॥ खवथकानस॥ उँलाव
कवलायनम॥ जवथकानस॥ उँवासवुजिधानस्थानम॥ जवकानस॥ उँवैवुजायनम॥
॥ हवन॥ उँसंसायिनम॥ थवन॥ उँज
वयुजा॥ उँवजयथसाहा॥ उँवजगस्थसाहा॥ ॥ उँवजयथसाहा॥ उँवजदीयसाहा॥ उँव
जनवयसाहा॥ उँवजलायायसाहा॥ मउलसलखहायके॥ वयुवलमयमवुममदी
यायक्षारिने॥ नानावलसमाकीर्त्त॥ नदनरुवदायिन॥ गुत्रयावृद्धधर्मस्यसंयत्यश्चन

थेवचनियान्यामिश्रावनसंयुक्तं वलमधुतं॥ ॥ॐ आ१ ह्रीं धीं मद्भक्तसंस्तुतुवववववव
कमलाय स माह्वानावशासनकमलाय नमः॥ ॥ॐ नमस्तुभ्यं नमानमः॥ ॥ॐ ह्रीं नमः॥
स्यामिगुणनाथयसिद्धिभायस्ययसादकि वल्लो१ ह्रीं विनात्मनात् वल्लयरायविकव
यहवन्धकाया१ यश्च गुणा विवदहो१ संवे लासमुच्चैः स्वामी नमः॥ ॥ॐ नमः॥
यनमहं॥ गुणनमस्तु॥ ॥ॐ नमः॥ वद्वायगुवुवनमाधर्मायनात्रुन नमः॥ संघाय
महर्गम विद्यायिसनननमः॥ सर्ववद्वनमस्यामि धर्माय ॥ ॥ॐ नमः॥ विनरायिनं संघवद्विलसं

यत्रं वल्लभयनभाऽस्तुते वल्लभयमहावनं सर्वयनिदिशामयं अनुभाय ऊगनयुं व
द्ववास्त्रोदधमनऽआवास्त्रोऽमवर्धयामि वदधमगोदधरुमऽवाधिचिरुकनामव भाय
नाथयसिद्धिमऽउत्थादयामियुवमं वव वाधियालिका वद्वारुवयं ऊगनादिना
यरादक्षनासर्वयायानां पुन्यानां वानुभा दाऽरुकायवा संव विष्णामि आयाना ग
थायधं मया वालनमुठन यक्किक्कित्थायमाधिनं यकृत्यायं यधसावय यरुप्यावयम
ववराकदत्ययं दक्षया मय नाथानामगनऽस्तिनंऽऽरुका ऊलिदऽस्वरीनं यनियस्यय

ॐ

नः पुनः ॥ अथ य मथ यत्न य निगुं न नाय का ४ न रु द क मि र्द ना था न क रु यं पु न म
या ॥ य था न क था ग ना आ यो ज रु क ॥ स मा कं व द व द ह न न व द व द या ज न क्रि य ध क्रि
क क श व मूलं य ज्ञा नि कं य नि का यं या द श य त्वा रा व य त्वा र्द हं य या ध म न या
स म्पि न ना क था दं म न भा य य था न य न ज्ञा न क्रि न क श व मूलं म न रु वा यां स मा कं वा य
क था दं य त्रि द श म या मि ना क था म मा न न स मा धि का लं लो क स्य दः ख य स र्वा द य र्द ह रु य
क रु य स द म्पु ह क्रि रु मं य का श व य थ व रा वी ना ह स ग न न स मि मा ग ना वा स व य का न

जगन्नादिनाय कृयाभिर्हसं सखसंहिताय ॥ ॥ वलिसलंखनय ॥ ॐ आ वमनं यनिष्ठुखा
हा ॥ ननायं का वद वायुमधुल नदयवका वद अग्रिमधुल नदय विआका वद मधुनय
वलिकाय विभु कृयमराजन नरुका दिय विय विनं ॥ ॐ आं जी खं हं ॥ लामा यां नां ॐ
डाका वज्रदधिविभिन यक्षममनय यक्ष यदि यत्र यदनिषा य ॥ ॐ आः हं वा वृठमठमुद
याधिविनिष्ठुन ॥ लाकया लमुडा दक्षिण ॥ ॐ आय स्वाहा ॥ ॐ यमाय स्वाहा ॥ ॐ ववृषाय स्वाहा ॥ ॐ
कुवराय स्वाहा ॥ ॐ अग्नय स्वाहा ॥ ॐ नैराय स्वाहा ॥ ॐ वायुव स्वाहा ॥ ॐ ॐ भनाय स्वाहा ॥ ॐ

उद्धवस्तुत्यादा ॥ उं स्याद्यस्तुत्यादा ॥ उं स्याद्यस्तुत्यादा ॥ उं स्याद्यस्तुत्यादा ॥ उं स्याद्यस्तुत्यादा ॥
थिवेस्तुत्यादा ॥ उं नास्तुत्यादा ॥ उं स्याद्यस्तुत्यादा ॥ उं स्याद्यस्तुत्यादा ॥ उं स्याद्यस्तुत्यादा ॥
नवाय ॥ ॥ उं वरुदिस्तुत्यादा ॥ उं वरुदिस्तुत्यादा ॥ उं वरुदिस्तुत्यादा ॥ उं वरुदिस्तुत्यादा ॥
यनिस्तुत्यादा ॥ उं वरुदिस्तुत्यादा ॥ उं वरुदिस्तुत्यादा ॥ उं वरुदिस्तुत्यादा ॥ उं वरुदिस्तुत्यादा ॥
मनयनिस्तुत्यादा ॥ ॥ उं वरुदिस्तुत्यादा ॥ उं वरुदिस्तुत्यादा ॥ उं वरुदिस्तुत्यादा ॥ उं वरुदिस्तुत्यादा ॥
धस्तुत्यादा ॥ ॥ उं वरुदिस्तुत्यादा ॥ उं वरुदिस्तुत्यादा ॥ उं वरुदिस्तुत्यादा ॥ उं वरुदिस्तुत्यादा ॥

ॐ वज्रयथाहं ॥ ॐ वज्रयथाहं ॥ ॐ वज्रावलाकिनको ॥ ॐ गन्धर्वजः ॥ ॐ हंसाहावजः ॥ ॐ हाहा
हायभा ॥ ॐ वज्रसत्त्वसंयामुव ॥ ॐ वज्रवत्तमनुरुव ॥ ॐ वज्रसमीग्राहिनेन ॥ ॐ वज्रकर्मकल्लहवः ॥
ॐ आः टक्किऊहं ॥ ॐ टक्किऊहायायभावादः ॥ न सुनि ॥ ॐ द्यादयामहावीला लाकया लाम
हयिका ॥ कीलयनुदशकाया विप्रहृत्मानमा ॥ सुत ॥ मरुतयथा ॥ ॐ हंसी ॥ ॐ हंसाहा ॥ वे
यानं वद्धविश्वं दिवशकधरा ॥ तसिया विद्वत्सं मेयीयं वात्रयं ॥ शिवशिववनं मंशयायवया
कं यथाहं दधुयं कुविनत्तवयुयं वज्रिधरि मनार्दं विह्वलं ह्वनयं निहिकरुवरुयं यं वमः

लीयधमा ॥ वलिमाला ॥ उं ॐ न्द्रादिवकिमहदवसधे विमं च गृह्णतु वरिविश्वः ॥ अश्रियः
माने अकिरूय निध आयाय निवाये धना धियश्च ॥ ॐ नानरूना धिय निध दवा उद्ध सवडा के
यिनामहश्च देवासममस्तु वयं च नागा ध वाधवा गुक्क गालोः समनाः यनियनिले क
लिवदय कि स्य कस्य काश्चैव दिक्षु सरूनाः गृह्णतु शासववाः समानाः सपुत्र दैर्वा मि
कः स्रजन समनाः धयं वलिपुष्पं नवादनश्च रुं ऊरु दियं रुयिवतु वदं ॐ दं व क मी सहलं श
यतुशा उं नमा वलनयाय वधुवजया धय महाकाशाय महादष्टकट रुं ववाय अशिमसवयवस

[illegible]

द्यायामधुलयासासुवननवाकवाय द्वाहालखाननद्वहावन निधमुदस द्वाहालखानन
 स्यं अधिष्ठानयार्सन सिंधुमयक ॥ ॥ रुजामानावाद् रुकुमुदक्षिनि रुधं ववद्वां
 कमीली वाधं गीष ध्यानमुदा निवृथमरु लदः सवादास्त्राकवान ॥ वेदास्य ध्वनयीः
 न यत्रय विद्विद्वामदास्त्रा निवाय ॥ ॥ यादावज्जधुमि युवनदिनरुकाकिम
 मवज्जका ॥ रुमा मधुल थलक खानमान कयवकाय ॥ मधुल विमरुनयावक ॥ लखवन
 लिवाकक्षुय ॥ ॥ धाययूजाक्षुय ॥ ॥ धनसुधियाय ॥ ॥ उन्नमः धीवक सववाय

三

॥ ॐ आ ४ दं श्री मद्भक्तसङ्गप्रवचनप्रदा क मलाय मय्यज्ञानावशासनक प्रायनमदं ॥ वदरवादिम
मयं सन्नाप्रदाय किमयं सङ्गप्रयत्यक्षद न म मायं हान सङ्गवः ॥ श्रीमन्वज्जकायजकिनी
वकवलिनी यश्च हान विकानायगानाय जगन्मानमः ॥ यावंतावज्जकिंय श्चिन
संकल्यवचना लाकाकृत्ययवत्यत्र नृकाव नीयानमः सदा ॥ अनित्याकालन शून्यनारि
वयम् ॥ श्रीकावमदयज्ञानं रुकावहृष्टं शून्यं वृकावमयगतशून्यं ककालनक विविचिषिम् ॥ ३
सर्वसत्त्वप्रदाहता शुक्लवर्णद्विभुजससत्त्वमात्मानं रावयम् ॥ तदनूकवह्मधनं ॥ दक्षिणहस्तं

आकाशस्य मधुलं ॥ वामदक्षमकाशवद्वमधुलं ॥ उं हः नमः ॥ हिसाहा ॥ वावउहहं हं हा
ः रुह १ हं ॥ उं वं हां यां डीं भां डं डीं हं हं रुह २ खा हा ॥ उं हं खा हा ॥ वज्र ॥ उं हा १ खा हा ॥ य धा ॥ क म
ला वरुन स्यु था य ॥ हां खा पि घा न ॥ उं धी व
खा हा ॥ उं ख धु प्रा हं रुह ॥ उं ख धु ला हं स व
घा न ॥ उं व रु यु या खा हा या दि १ ॥ उं आं रु ॥ उं म का प्रा मुखं स व धर्मा या दि १ ॥ व लि अ पि घा
न ॥ उं स य नि वि न व रु खा हा ॥ उं आ १ रु ॥ म धु ल या ना अ पि घा न ॥ म रु या रु ख ध न ॥ उं ह १ हा १

दी० मुखखादा॥ यन० पीत्वा मृन्मना सा वथ न॥ दी० का प्र दाय म्मां ऊनं मा का प्र दामा म किं कृष्ण॥
द्वि० ऊा वज्र वज्र हस्तं हं का प्र दामा का य० कृष्ण द्वि० ऊा वज्र वज्र हस्तं॥ तत्सं यथा सा दामा मा ह
यन० दु वीरु नं य ध्व न॥ यन० ह० ह० दी० मुख
गुच्छ वज्र नि का ध्व श्री सर्व दया या यिनी ह॥
॥ उं वज्र हस्तं॥ उं यं ऊं ऊं आत्मां वा दं मां कां ऊं किं कां कां लं कां दि० यं गुं मां मं नं मं मं कं॥ उं यी॥ अय
यी० कृष्णाय कृष्ण कृष्णाय कृष्ण मलायकाय मलायकः० ग्म ग्म नय ग्म ग्म न॥ उं ह० नमः० दी० खादा॥

हं वा व उ हं हं हं ॥ उ वं हां यां दीं मां कं कीं हं हं हं ॥ उ वं हां यां दीं मां कं कीं हं हं
हं हं हं ॥ उ हं न भ व हं हं ॥ उ या ग भ व हं हं ॥ उ मा त्मानं भ व हं हं ॥ क ता ख ह द य अ का य व व हं
म धु ला य वि हं हं का वं आ का व व हं हं ॥ क का वा नं ॥ आ लि का लि यं क नि न य हं हं व
हं हं व हं म वा य ॥ क द हं व य वि न न व क
वा व न व द ना ख व व क म य ॥ स ह्ना न ख व य म नृ य ॥ स ह्ना व ख व व क ना क ॥ वि ह्ना न ख व
व क म ख ॥ स व न था ग न व ॥ शी द न व क व क ॥ व हं या मा हा व क ॥ ॥ क था व व व क ॥ या य या नी ॥

आ व जी । व कृ मा ग व कः स ह मा स र्य व कः । सर्वा य त्वं स श्र य व कः । पृथि वी श्र य या न नी अ य न
 श्र य मा न नी न ऊ श्र य वा क र्ष णी वा य श्र य य म नृ य श्र यी आ का स श्र य य म काल नी । अ य न
 ना आ लि का लि य क्रि म श्र यं का व य वि ष न स र्य म धु लं न त्म श्र यं का व य वि ष म न र गः १०
 व नं कृ य व र्णं य द्रु कं य थ म रू का र्णं व कः व क य श्र य नं दि मि या र्णं ख श्र य न नी याः
 ह्रीं । रु मि या र्णं उ म नृ ख द्वां ग । व रु म र्णं कृ य श्र य मं व क र्णी नं । का का श्र य कृ षा । उ लु का श्र य
 मा । श्र य ना श्र य व कः । गृ क ला श्र यी ना । य म उ टी कृ य र्णी ना । य म दू री यी न व कः । य म दं शी व कः

[illegible]

नरुंरुं १३ कीलय २ सर्वथाया नरुंरुं १३ वजकीलय न वजधवा आरुययनि । सर्वविघ्नविना
यकानां कायवाकिरु वजानकीलय २ १३ ॥ ३ वजमज्जव वजकीलय माकाटय २ १३ ॥ ३
निविघ्नसावय ॥ ॥ नरुः स्वदयसु ॥ ३ काव वसि निरुगदर्थकता अकनिष्ठ ॥ ३
रुवनंगत्वा गुरुसु अनादि संसिद्धि । कथा ॥ ३ दक्षता कंरु गवर्कं सयविवा वंरु गवर्की ॥ ३
समायनंय अरु ॥ ३ नगा द्दिऊ वसि माना ॥ ३ आरु स्रुन वंरु । आका द्दिऊ अरु मुखं म
रिसंयूज स मरु स मय मरु लय व अरु स म व सीरु लय मना मयी रिसंयूज द वी रिसंयूज

थन॥ ३॥ यायादि॥ धीवज हं हं वृ क हं हं रु उ कि नी जाल स म व सा दा॥ या यं या रु ह न
आ व म र्ग ज १ हं वं दा १॥ य य या हा॥ ॥ उं धी व ज हं हं वृ क हं हं रु उ कि नी जाल स म
वं सा दा॥ उं डीः हं हं रु २ रु २॥ उं स व वृ क ज कि नी य हं २ रु २॥ उं व ज व र्ग नी य हं २ रु २॥ उं
व ज व र्ग नी य हं २ रु २ रु सा दा॥ म ध ॥ उं उ कि नी य हं २ रु २ रु सा दा॥ उं ल म हं २ रु २ रु सा दा॥ उं
ख गु ना हं २ रु २ रु सा दा॥ उं वृ धि नी य हं २ रु २ रु सा दा॥ उं वा धि वि ल मृ द सा २ रु २ रु सा दा॥ ४ ॥ उं का
का ग्य हं २ रु २ रु सा दा॥ उं उ ल का ग्य हं २ रु २ रु सा दा॥ उं श्व ना ग्य हं २ रु २ रु सा दा॥ उं स क ला ग्य हं २ रु २ रु सा दा॥ उं य

मदानीय हूं १ हूं दूखा हा ॥ उं य म द ति य हूं १ हूं दूखा हा ॥ उं य म द श्री य हूं १ हूं दूखा हा ॥ उं य म म थ नो य हूं १
हूं दूखा हा ॥ उं व भू ग हा य हूं दूखा हा ॥ उं ग क वा य हूं दूखा हा ॥ उं काली कला य हूं दूखा हा ॥ उं कल क र व वा य हूं
दूखा हा ॥ उं अ द द हा मा य हूं दूखा हा ॥ उं ल श्री व न दू मा स ना य हूं दूखा हा ॥ उं धा वा न का वा य हूं दूखा हा ॥
उं किलि कला ल वा य हूं दूखा हा ॥ यं था य हा व यू जा ॥ वा उ हा ला ग्ना ॥ उं ज वि (हा हूं ॥ उं व ज वं (हा हा ॥
उं व ज मृ दं (हा हा ॥ उं व ज म नू ज अ ॥ उं व ज ला ग्ना ॥ उं व ज मा ल गां ॥ उं व ज गि न की ॥ उं व ज नृ त्य अ ॥ उं
उं व ज य थ हूं ॥ उं व ज धू य गा ॥ उं व जा व ला कि न की ॥ उं वं ज नृ ग थ व ज अ ॥ उं व जां द ही न हूं ॥ उं व हा व

ॐ हूं ॥ ॐ सा सव ज हूं ॥ ॐ धर्म धारु गार्ह अ ॥ ॐ ध धा वा द न सु कि ॥ सर्व ह्म ज्ञान सं दा ह्म ज ग द र्थ य धा ध क ॥ वि
ना म नि वि व रु तं धी स म्भ वं न भा मु न ॥ वा य वि षा म हा ज्ञान सर्वा म नि स दा स्थि क ॥ कृ त्या का ध म हा त्र
द धी स म्भ व न भा मु न ॥ म नु न र्थ षा ॥ ॐ न भा रुः रा व न वी व वी व श्र वा य हूं १ रु द् ॥ ॐ म सा क ल्या
मि स नि रा य हूं १ रु द् ॥ ॐ क टा म क टा क टा य हूं १ रु द् ॥ ॐ द द्वा क ला वा ग री ष ष म्भ वा य हूं १
रु द् ॥ ॐ स द्म रु ज ना स्र वा य हूं १ रु द् ॥ ॐ य व धू या षा य न धू व ख द्वा ग धा वि षा हूं १ रु द् ॥ ॐ या य जि
ना म्भ व वि षा हूं १ रु द् ॥ ॐ म हा धू मां ध का वा र्ध व य वा य हूं १ रु द् ॥ ॐ सा हा ॥ ॥ या य द धा ना क क कालि ना नः

भादिना मद्यमयितुनिदिनदायानां यतिदक्षायामि यत्र नः युनदकं सचत्रं विवधैव कः स्वः
किं नारुम किमकिनसक संरुमानिः कृदात्रानि अनुभादिनानि वा क्षीसम्यक् विवधमया मखः कि
नयत्नादि कुर्यं सर्वसाक्षवर्धं याति किः सर्वः सावदवाधिविहं विवधः नरुवमागच्छथाः
स्यवः ॥ ॐ स्वादिशावा ॥ ॥ नदनुमः ॥ कीकनुवमदिनायक्रामि वरुवक्रविदायाका
वयनः ॥ स्वसावधुदाः सर्वधर्माः स्वसावधुदाः ॥ धृयमाज्ञानवज स्वसावत्माकादं ॥ विरुमागच्छव
निधनः ॥ विधिसुसावयुवदाः ॥ ननायतिधनवसाः ॥ धृयमातायतिवृद्धः ॥ ॥ यंकायदावाय

मधुलं नीलं प्रचरं भ्रूजां कृतं ॥ नद्य विवं का प्रह ॥ अग्निमधुलं त्रिकां वरुं ॥ नद्य विवं का प्रह ॥ वः
प्रहमधुलं वरुं लं नद्य ना कृतं ॥ नद्य विवं का प्रह ॥ यथिवी मधुलं वरुं न सयी न वरुं का ॥ ध्रुवि
शूकजा कृतं ॥ नद्य विवं का प्रह सभमं वरुं वलमयं वरुं नमं अमृशुगयसा कृतं ॥ नद्य
यविवं का प्रह कृदागमं वरुं नम वरुं दानं ॥ वरुं नन रुयितं हा नद हा न वरुं ली कमही
वययनं ॥ नद्य विवं का प्रह विश्वयमं नम ॥ ध्रुवं का प्रह विश्व वरुं ॥ नम ॥ ध्रुवं जान विश्वयमा स्रद
लं ॥ नद्य विआलिकालि विगुलन वरुं मधुलं सूर्यमधुलं व ॥ नयाम ॥ ध्रुवा का स्रुं का वरुं नदी सः

रूपमात्मकं न तत्तत्वे विहितं आत्राधयमधुलसं श्रीहनुकसमाधुलया मात्मानं सावयकानमात्मा
 नं कृष्यं वरुमसं मूलकृष्यं वाभध्यामं यश्चिममकं दक्रि। हायीनं विकृता ननं दृष्टात्कटरीये हं यति
 मुखं नक्रवतुन विभनं विश्ववजां किनमालि न ऊटामकुटिनं वागवलनाद्वद्वभीलीनं
 वज्रमालागच्छिककयालयश्चकध्वनिर्हं द्वाद शुरुजं यथमशुकदयन वज्रवायादी आलिंगा
 नस वज्रयधधव। द्विनिथशुरुजदयन गजवर्मावधधवं। एति शुरुदयन उमवृष्यदां राधधवं।
 शुरुथशुरुजदयन यवशूवकृष्यकयालयधलं। यश्च शुरुजदयन कलियाशधधवं। यश्चमशुकदयनविन

१४

धूलवक्रमिवाधवं॥सद्ययक्षस नत्रसिन्मालाधालिर्दं।आयवर्मनिवाहनं शृङ्गाववीरुत्सहास्यः॥
चोदकस्यानकं।कृत्वाद्रुतक्षार्केनवननाद्यवसाविर्गं॥कधीकृधुलकयुवक्षिभामक्षि।यक्षायविनः॥
रक्षश्चतियत्माडामुदिनो।वविमधुलवामः॥ दक्षिणरागयनिकरेववकालिवाविवाभ
कक्षेस्मनयुगावथा।जालीठासनसंस्थितंरुगाः॥ वक्तृशीवकसम्भवंरुगावक्तृमात्मानंरावथ
॥ • ॥ववक्तृवावादि।वक्तृवक्षेमुक्तकक्षमिन्ना।एकवक्त्रादिगाम्ना।स्वधुमधुनभस्यलादि
युक्तावामयुक्तन।वक्तृयुक्तकयालधवा।दक्षिणयुक्तनद्रुतगर्जनीकरिका।यंवमुद्राविरुधिमोः॥

सर्वप्रधानना ऊंघाद्यनरुगावर्कसमागुक्तनुवाशयकी एवंगुगावर्नीगावयन॥ ✽
 ॥ ननायेवीदिद्यायुताकिनी लामा खधुनाहा नुयिनी ॥ कृष्णमत्रकलोत्रयां एकवकावयु
 युजा कयात्रखदांगवामकवा उमत्रकलिः कादकिहाकवा दक्षकवालवदनायकमु
 डाविशुषिना ॥ आलिहासनसंस्थिता ॥ विः दिगादलषु वाधिविरुकयालाविधवस्थिनी
 पूषादिद्याय काका ॥ कृष्ण उलका ॥ आमा ॥ आना ॥ अत्रका ॥ कृष्णायिना ॥ अग्नियादिक
 ॥ अयममतादि कृष्णयीना ॥ यमदनीयीकवका ॥ यमदक्षीवका ॥ आमा ॥ यममथनी ॥ अमकृष्णयीना ॥

[illegible]

मायादि॥ अरिषक महावज्रं शेषाशुकेन मल्लुकेन युष्माकं युजनाथाय मकटयं वक्रयं वक्रः
वाङ्मवः ॥ उं सव्ववद्ववजामहिममहामकटाक्षियदं ॥ मकट ॥ उं वक्रधनं श्री अरिषियदं ॥ उं सलव
जा अरिषियदं ॥ उं नलवजी अरिषियदं ॥ उं धर्मवजी अरिषियदं ॥ उं कर्मवजी अरिषियदं ॥ उं
विष्णु ॥ उं अरिषियदं ॥ मसिवद्ववजा
द्वय ॥ वक्रकाय ॥ उं वजाधियनित्वा मरिषियं चामि निष्ठवज्रममयत्वं ॥ यथकाय ॥ उं वज्रसत्त्वाम
रिषियं चामि वज्रनामा रियकट ॥ दधीद्ववक्रनामनथा गनरुवः ॥ स्वः ॥ नाम ॥ ॥ यूववदाक

वैष्णवाद्यादिपुष्पनाभायवायदात्रयूजा वाउमलाश्च यथावादनमुक्तिः ॥ धीवक्त्रमन्त्र
ममन्त्रवक्त्राकवीप्रश्नवी यत्रववीवगक्षधिवक्त्रकालाननाल्लितवाक्त्रइयल्लापगुण
कावृद्धरुचनमामिन्नवांघ्रियन्त्रं ॥ ॥ ॥ निमगुलदियागा मन्त्रनयं ॥ ॥
॥ निदिनीयथागा ॥ ॥ ननाश्रुलिका • लियक्रियश्चस्मिकानुश्चदवनावृद्धाः
नुश्चाप्रयन् दक्रिष्टवायुनानिःसृक्ष्य जगन्निवकीकृत्य अनादिमंसिद्धि वीवही समसीरुनाः
न वामनासायुष्टयवश्च नाशोयनिद्विषन् स्वाकावावदुमधुलीरुगान् विविह्य नवमटिनि

शुक्रकृत्कारं नृचन्द्रवीर्यविषकृत्गवर्कं सहजसम्पन्नं शुक्रवर्धुमालीढासनस्यं आकाशवि
 लंसदृष्टं द्विचक्रमकवर्कं वक्रवक्रयक्षध्वं उरुयाख्यां वक्रकयालक्षालिनी द्विचक्रकमुद्विचक्र
 वक्रवावादी समायन्नविशया नयामायासूत्र
 वयनं कर्गतिश्चक्षुःश्रुतिश्चक्षुःश्रुतिश्चक्षुः
 श्रुतिश्चक्षुःश्रुतिश्चक्षुःश्रुतिश्चक्षुः
 श्रुतिश्चक्षुःश्रुतिश्चक्षुःश्रुतिश्चक्षुः

कल्य ॐ ॥ १५ ॥ यमि श्वा रा व नी या ॥ १ ॥ न न च स म न स न क म ह न ग ड व य न न द व य वि ष नं क्षि द्वा
न क्र म क्रा रु ल स ह स रू का रं म ह स रू म यं रा व य न ॥ न क ड का रं ह का रं ह का रं शि व क्षि क्षि वा
ई व ड अ ड व ड वि द्यो वि द् ना द ना द वा ला य स न स ह स रा ग व यं चि न थ न नि चि क
लं म ह स रू म यं चि रं नि य थ न ॥ य न १ स त्वा थ म टि नि म डु ल म धि म थ ॥ ॥ य व व
न आ क र्ष ण या आ दि य थ न्या ण य वा य ह व यू ज्ञा या द ण ला य थ वा द न सु ति न थ ण ॥ ॥
ॐ नि गू ऋ था ग १ ॥ ॥ ऊ य ॥ ॐ नि जा य आ ग १ ॥ ॥ य व व न आ क र्ष ण य थ न्या ण य वा

यहा प्रयुजा पाठाला ग्या यथावादन सुनि नयिहा ॥ नभावलिरावना ॥ नभायंका प्रहावा ॥
युमधुलं नदय विर्वंजान नमि मधुलं नमुगुद्रा आका प्रक शिनय म्म र्नां ऊनं मधुनि नय वलिका ॥
याथावस्थितं ॥ नमुगुद्रा दिय विर्य विनं ॥ डं नां आं खं हूं लं मां यां नां डं का प्र न द धि चि न यं वा ॥
मृगय अय दिय प्रय धनि स्या अ या यु य वि नः कलि ना मि ना य वि ली नं वी जा क ना दि कं अ ॥
ति न रा न व र्णं द व प्र यं द द्वा ॥ नदय वि वि न र्नां न वि नं कृ त्वा आ लि का लि य लि ष न र्नां ॥ डं आ ॥ ४ हूं ॥
का प्र य ॥ अ न कं म न ड य वि लि क र्नां अ क द व ना र्नां वि ना ड ना द र्थ कृ त्वा स क ला मृ ग व स मा नी ॥

१८

[illegible]

रावकुर्कुरुइखाहा॥

राय्यादियूजा, वाठगला, यथावादन, मुक्ति, मन्त्रनर्थादिस

शान्ताश्रम क्रमायन॥

॥ॐ टिठ्यादहात्मकसमाधिदगुनिसमायं॥ ❀ ॥धर॥

सन्वत् ८८३ माघ कृष्ण ३ आया शुभ ॥

लिखितं सप्तमं लक्षणं यथा वक्तव्यं

मौन्यकसिद्धन लिखितं सम्यक् मिति॥

॥ ह्यनानं सारुया रुसायं च महायायना कश्चन ॥